साप्ताहिक

डाक पंजीयनः म.प्र./भोपाल/4-479/2019-21

RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 27 दिसंबर -02 जनवरी 2022 अंक 39

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

सुस्वागतम-2022

अरविंद मिश्र
स्थानीय संपादक

वर्ष-2021 चलाचली की वेला में है। 2022 आ रहा है। 'जागत गांव हमार' परिवार किसानों, ग्रामीणों, प्रदेशवासियों की खुशहाली की कामना करता है। हम कामना करते हैं कि 2022 वैसा न रहे, जैसा 2021 रहा। गुजर रहे वर्ष में मानवता ने भयानक संकट देखा। ये संकट कोरोना वायरस की दूसरी लहर का था। ग्राम्य-जीवन भी इससे बुरी तरह प्रभावित हुआ। कई लोगों ने अपनों को खो दिया, कई हंसते-मुस्कराते परिवार उजड़ गए। प्रदेश सरकार ने अपनी जनता का मजबूती से साथ दिया, लेकिन इस तथ्य को भुलाया नहीं जा सकता कि मानवता ऐसे संकट की साक्षी बनी, जैसा सदियों में एक बार आता है। अगला साल पिछले को दोहराए न, बस यही कामना है। हम सब उन चुनौतियों से जूझ सकें, जो हमारे सामने उपस्थित हों। यह कहना तो ठीक नहीं होगा कि चुनौतियां आएं ही न। दरअसल, चुनौतियां हमें सबल बनाती हैं, निखार देती हैं, हमारे भीतर जूझने की ताकत पैदा करती हैं, इसलिए जीवन में चुनौतियों का आना तो शुभ ही होता है। अशुभ तब होता है, जब चुनौतियों से जूझने की ताकत हमारे अंदर पैदा न हो। भरोसा है कि ये अशुभ नहीं होगा। किसानों, कृषि कार्य में लगे सभी लोगों का जीवन तो वैसे भी चुनौतियों से भरा हुआ होता है। किसान प्रकृति पर निर्भर होता है और प्रकृति वह शक्ति है, जिस पर किसी का काबू नहीं चलता। किसान हंसता, मुस्कराता, अठखेलियां करता हुआ इसी प्रकृति से जूझता है। कामना यही है कि इस क्षमता में इजाफा हो। आओ, नए साल का स्वागत इस उत्साह से करें कि पुराना साल हतप्रभ हो जाए, यह देखकर कि मानव जाति उसके दिए जख्मों से मुक्त हो गई हैं।

केंद्र सरकार ने खुद संसद में स्वीकारा-तीन राज्यों में घटा रकबा

मध्य प्रदेश, राजस्थान और यूपी सिमट गई अफीम की खेती

संवाददाता। भोपाल

सरकारी नियंत्रण में होने वाली अफीम की खेती कभी भारत के कई राज्यों में होती थी, लेकिन पिछले कुछ दशकों में ये राजस्थान, मध्य प्रदेश और यूपी के कुछ हिस्से में सिमटकर रह गई है।

सरकार के मुताबिक अफीम का उपयोग सिर्फ औषधि निर्माण में होता है, इसलिए जरुरत के हिसाब से ही इसके लाइसेंस दिए जाते हैं। इसके अलावा सरकार ने विदेश को निर्यात होने वाली अफीम पर रोक लगा दी है। इसका असर भी खेती पर पड़ा है। संसद के शीतकालीन सत्र में राजस्थान में नागौर से सांसद हनुमान बेनीवाल के सवालों का जवाब देते हुए केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि अफीम की खेती के लिए सरकार का मौजूदा नियम (मॉर्फिन प्रणाली) ही लागू रहेगी। अफीम की खेती और नियम पर सरकार ने संसद में कहा कि देश में अफीम की खेती संयुक्त राष्ट्र संघ के ड्रग मामलों संबंधी सम्मेलन और एनडीपीएस एक्ट 1985 के अनुसार अफीम और उसमें मौजूद उत्पाद अल्कलॉइड के चिकित्सा उपयोग के उद्देश्य से की जाती है।

पहले अफीम गोंद का उपयोग घरेलू उपयोग के लिए एल्कलॉइड के निकालने के अलावा कई देशों में निर्यात के लिए भी किया जाता था, लेकिन अब आयातक देश अफीम गोंद के बजाए कॉन्सेन्ट्रेटर ऑफ पोस्ता स्ट्रॉ से एल्कलॉइड निकालकर अपनी चिकित्सा जरुरतें पूरी कर रहे हैं। इसलिए देश में अब अफीम का उत्पादन केवल देश की जरुरत के लिए ही किया जाता है।

- अफीम की खेती ही चिकित्सा उद्देश्य के लिए एल्कलॉइड विशेष कर मार्फिन प्राप्त करने के लिए होती है, इसलिए किसान को दिए जाने वाले लाइसेंस में अफीम की मात्रा को मॉर्फिन में बदला गया है। अफीम की खेती में पहले जो औसत उपज के आधार पर सरकार को अफीम देने का नियम था वो कम वैज्ञानिक था उसके बदले जो मार्फिन का नियम है, वो ज्यादा वैज्ञानिक है। साथ ही इससे गुणवत्ता वाली मॉर्फिन मिलती है, इसलिए आगे भी यही नियम लागू रहेगा।

पंकज चौधरी, केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री

- अफीम की खेती में सरकार ने इतने नियम-कानून लाद दिए हैं कि ये किसान के बस की बात नहीं रही है। खेत में कितनी अफीम पैदा होगी ये किसान मेहनत और खाद-पानी डालकर ज्यादा कर सकता है, लेकिन उसमें मॉर्फिन कितनी निकलेगी ये कैसे तय करेगा। दूसरा मॉर्फिन सरकार की फैक्ट्री में तय होती है, अंदर क्या हुआ किसी को नहीं पता। जो अधिकारी लिख देते हैं, हमें मानना होता है। सरकार को चाहिए ये मॉर्फिन के नियम में बदलाव करें।

अमृतलाल पाटीदार, किसान, मंदसौर

- ये बहुत जोखिम वाली खेती है। किसान डर-डर कर खेती करते हैं। मॉर्फिन का नियम पूरी तरह गलत है। मॉर्फिन, अफीम के अंदर पाया जाना वाला रसायन है वो किस खेत में किस जगह कितना निकलेगा ये प्रकृति पर निर्भर करता है। हमारे यहां पिछले साल एक ही खेत में दो किसानों को पट्टे थे, और दोनों की मॉर्फिन काफी कम निकली थी। जब दोनों ने बराबर खाद-पानी दिया था।

जितेंद्र सिंह, किसान, मंदसौर

- सरकार एक पात्र किसान को औसतन 12 आरी (0.12 हेक्टेयर) अफीम की खेती का पट्टा देती है। हमारे घर में दो पट्टे हैं। सरकार के नियमों के मुताबिक 9 किलो अफीम ले जाएंगी, जिससे मॉर्फिन निकलेगी तो 10 हजार रुपए मिलेंगे। इसके अलावा अफीम के दाना (खसखस) बेचकर 12 आरी से करीब डेढ़ लाख मिल जाएंगे। लेकिन इतने झंझट है कि पूछो मत। हम लोग अब अफीम की खेती इसलिए कर रहे हैं क्योंकि ये मान सम्मान की बात है।

रवी पाटीदार, किसान, मंदसौर

अब खेती की एडवांस तकनीक सीखने जाएंगी कनाडा, कृषि विश्वविद्यालय के पांच विद्यार्थियों को मिला मौका

मध्य प्रदेश की बेटियों की कृषि क्षेत्र में ऊंची उड़ान

संवाददाता। भोपाल

खेती-किसानी को अब तक पुरुषों का ही क्षेत्र मामना जाता है, लेकिन अब बेटियों के कदम इस क्षेत्र में बढ़ते रहे हैं। खासकर कृषि से जुड़े अध्ययन के क्षेत्र में। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि से बैचलर इन साइंस-एग्रीकल्चर करने वाले के पांच विद्यार्थियों को कनाडा जाकर कृषि और उद्यानिकी की एडवांस तकनीक सीखने का मौका मिला है। इनमें से चार छात्राएं हैं, जो प्रदेश के ग्वालियर के गोहद, भोपाल, छिंदवाड़ा और सतना की रहने वाली हैं। इन विद्यार्थियों का स्नातक चार की बजाय पांच साल में पूरा होगा। पहले तीन साल छात्र विवि में पढ़ेंगे। अगले दो साल कनाडा जाने का मौका मिलेगा। इन दो सालों में एक साल का खर्च वर्ल्ड बैंक उठाएगी और एक साल का खर्च छात्र को स्वयं वहन करना होगा। कृषि विवि ने नवंबर-2020 में कनाडा की डलहौजी यूनिवर्सिटी के साथ एमओयू साइन किया था। इसके तहत 2021 बैच के पांच विद्यार्थियों का चयन पिछले पांच सेमेस्टर में 7.5 सीजीपीए अंक हासिल करने पर हुआ है। इसके बाद इन छात्रों का साक्षात्कार हुआ। जिसे क्लियर करने के बाद यह सभी जनवरी के दूसरे सप्ताह में कनाडा की डलहौजी यूनिवर्सिटी में अध्ययन के लिए रवाना होंगे।

- पहली बार कृषि छात्रों को विदेश में पढ़ाई करने का मौका आईसीएआर की पहल से मिल रहा है। वह कनाडा में उन्नत खेती व कृषि के क्षेत्र में नई तकनीक सीखेंगे। जिसका लाभ उनके लौटने पर किसानों को मिलेगा। एक साल का खर्च वर्ल्ड बैंक उठा रहा है और एक साल का खर्च छात्र को उठाना होगा।

डॉ.एसके राव, कुलपति, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि, ग्वालियर

- नेशनल एग्रीकल्चर हायर एजुकेशन प्रोग्राम (नाहेप) वर्ल्ड बैंक और केंद्र सरकार के माध्यम से यह अध्ययन शुरू हुआ है। यह आईसीएआर के माध्यम से प्रोजेक्ट मिला है। जिसमें छात्रों को स्किल डेवलमेंट कराने का लक्ष्य है। इसमें एक साथ दो देश की ड्यूल डिग्री एग्रीकल्चर और क्रॉप साइंस की पांच साल की दी जाएगी।

प्रो. डॉ. अखिलेश सिंह, विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि, ग्वालियर

- दो देशों की एग्रीकल्चर संबंधी मार्डन टेक्नोलाजी को समझने का मौका मिलेगा। कनाडा की आधुनिक खेती को समझकर जब अपने देश में इसका उपयोग करेंगे तो उससे किसानों को लाभ मिलेगा। हॉर्टीकल्चर के क्षेत्र में उन्नत खेती करने का उद्देश्य पूरा होगा।

कुलदीप सिंह आंजना, छात्र, उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर

- आधुनिक खेती के बारे में हम सीखेंगे, इसके साथ ही मार्केटिंग के बारे में भी जानेंगे। वहां की तकनीक को अपने देश लाकर किसानों को आधुनिक खेती से रूबरू कराएंगे। यह पहला मौका है जब छात्रों को पढ़ाई के लिए विदेश भेजा जा रहा है।

श्रेया चतुर्वेदी, छिंदवाड़ा, उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर

- हमारा देश कृषि प्रधान है। पहली बार छात्रों को विदेश जाने का मौका दिया गया है। हर स्थान पर एग्रीकल्चर की तकनीक अलग-अलग होती है। वहां की तकनीक को समझना है और उसे अपने देश लेकर आना है, जिससे किसानों को उन्नत खेती कराई जा सके।

शैली तांडेकर, भोपाल, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि महाविद्यालय

- मार्च में मुझे इस प्रोजक्ट के बारे में जानकारी मिली थी। मैं प्लांट साइंस के क्षेत्र में कार्य करना चाहती थी, जिसमें मेरा सिलेक्शन हुआ तो मैं कनाडा जाकर वहां की तकनीक सीखूंगी। वहां से तकनीक सीखकर अपने पिता का व्यवसाय आगे बढ़ाऊंगी।

चंद्रिका चतुर्वेदी, गोहद, जिला भिंड, कृषि विवि, ग्वालियर

- भारत की कृषि पद्धति की जानकारी है। अब हमें कनाडा जाकर वर्ल्ड वाइज तकनीक की जानकारी मिलेगी। कनाडा की अधुनिक तकनीक को सीखकर जब अपने देश में इसका उपयोग करेंगे तो मप्र के कृषि क्षेत्र में और तेजी से प्रगति होगी।

विजयाराजे सिंह, सतना, कालेज ऑफ एग्रीकल्चर, इंदौर

» प्रदेश में सबसे ज्यादा सोयाबीन की होती है खेती

» अभी नौ राज्यों में चल रहा नई किस्मों का परीक्षण

» किसान फसल कैसे बचाएं, बेहतर उपज के तरीके

सोयाबीन के उत्पादन में हमारा एमपी अव्वल

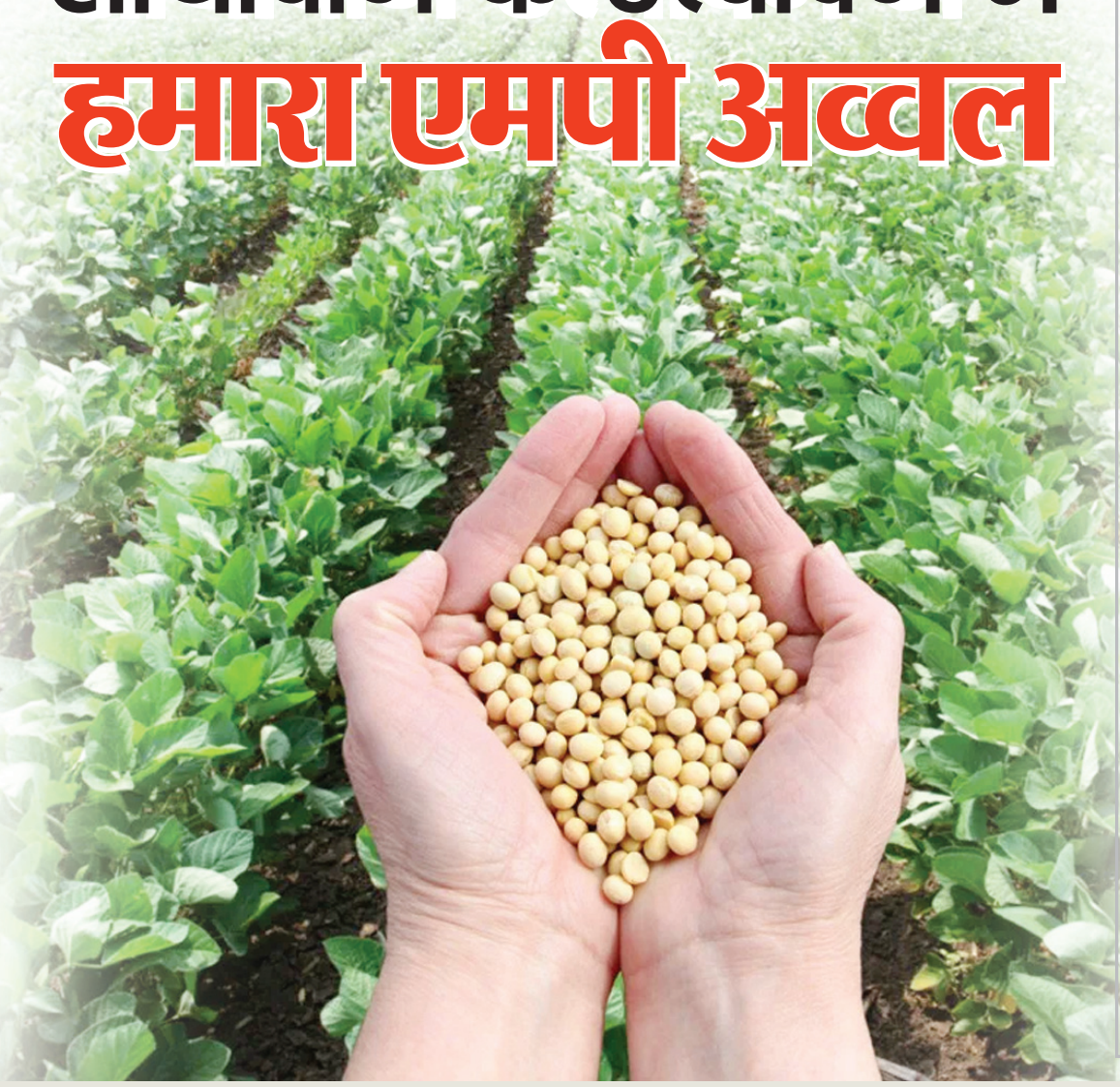

प्रवीन नामदेव, जबलपुर।

किसान सोयाबीन की खेती नकदी फसल के तौर पर करते हैं। सोयाबीन में सबसे अधिक रोग और कीटों का प्रकोप लगता है। खेत के खेत सूख जाते हैं। देश में सबसे अधिक सोयाबीन उत्पादन का तमगा शिवराज के किसानों के पास है। ऐसे में किसान सोयाबीन की कौन से किस्मों का चयन करें। कैसे फसल को बचाएं। बेहतर उपज कैसे लें। 'जागत गांव हमार' के इस अंक में जवाहर लाल नेहरू कृषि विवि के सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. एमके श्रीवास्तव ने साझा किए अपने अनुभव और किसानों को बता रहे हैं उन्नत खेती के तरीके। उनका कहना है कि देश का 50 प्रतिशत सोयाबीन उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है। वर्तमान में देश में 120 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन की खेती हो रही है। मप्र में 58 लाख हेक्टेयर एरिया में ये लगाई जा रही है। सोयाबीन की खेती मालवा में अधिक सफल है। जवाहर लाल नेहरू कृषि विवि ने अब तक 18 किस्मों का विकास किया है। 10 किस्में देश के 74 प्रतिशत क्षेत्रों में बोई जा रही हैं। ब्रीडर बीज के तौर पर देशभर में 14 हजार क्विंटल बीज की मांग है। इसमें 9 हजार क्विंटल बीज की मांग सिर्फ जवाहर

खाद व बीज की मात्रा

बोवनी के समय किसान 20 से 25 किलो नाइट्रोजन, 60 से 80 किलो फॉस्फोरस, 20 से 25 किलो पोटाश एक ही बार में बेसल डोज के तौर पर खेत में मिला दें। 20 जून से पांच जुलाई तक बोवनी कर दें। प्रति हेक्टेयर 80 किलो बीज लगता है। उत्पादन 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होता है।

किसान करें गहरी जुताई

रबी की फसल खाली होने पर खेत की गहरी जुताई करें। बहुत सारे कीट व बीमारी मिट्टी से पैदा होती है। मिट्टी उलटेगी, तो कीट व बीमारियों की तीव्रता कम हो जाएगी। खरीफ की फसल होने के चलते सोयाबीन में सबसे अधिक कीट व बीमारी लगती है। किसान समय पर प्रबंधन कर लें, तो कीट व बीमारियों से फसल को बचा लेंगे।

जवाहर किस्म का करें प्रयोग

किसानों को सोयाबीन किस्मों का चयन क्षेत्रीय अनुकूलता के आधार पर करनी चाहिए। हल्की जमीन है, तो वहां शीघ्र पकने वाली किस्मों का चुनाव करें। जेएनकेवी द्वारा विकसित 2069, 2034, 2098 और वर्तमान में विकसित की गई जवाहर 20-116 का प्रयोग करें। इससे अधिक उपज मिलेगी। इसमें बीमारी भी नहीं लगती है।

जनित रोग से बचाने दवाओं का करें छिड़काव

सोयाबीन में मृदा जनित और विषाणु जनित बीमारी अधिक लगती है। सोयाबीन में पीला विषाणु रोग लगता है। यह सफेद मक्खी से फैलता है और पूरे खेत की फसल पीली होकर सूख जाती है। पुरानी जातियों में इसका प्रकोप अधिक देखा जा रहा है। नई चारों जातियों में इसकी तीव्रता कम देखने को मिली है। एक-दो पौधे दिखें, तो नष्ट कर दें। सफेद मक्खियों को कंट्रोल करने के लिए समय पर दवाओं का छिड़काव करें।

किसान अनुशंसित दवा का करें उपयोग

सोयाबीन में चारकोल जड़ सड़न रोग भी लगता है। ये पौधों को सुखा देता है। एक बार खेत में रोग फैला तो बचाव मुश्किल है। ऐसे में खेत में फफूद नाशक दवाओं का पहले ही छिड़काव कर दें। सोयाबीन पर अलग-अलग चरण में हरा सेमालूपर, कंबल कीट, चक्रभंग, तम्बाकू इल्ली, अलसी इल्ली हमला करते हैं। किसान अनुशंसित दवाओं का उपयोग करें।

नई किस्म विकसित कर रहा कृषि विवि

जेएनकेवी के कृषि साइंटिस्ट सोयाबीन की नई किस्म विकसित करने में जुटे हैं। ये 85 दिन में पक जाएगी। इसका उत्पादन 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होगा। यह बहुरोग रोधी होगा। देश के नौ राज्यों मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, तेलंगाना, नार्थ ईस्ट के राज्यों में इसका परीक्षण चल रहा है। अभी तक के परिणाम बेहतर हैं।

होगी बंपर पैदावार, पॉली हाउस में साल भर करें खेती

किसान फरवरी में लगाएं खीरा, दो माह में मालामाल

इधर, प्रगति शील किसान एवं मप्र पुलिस में डीएसपी आरएस कालरा ने अपने अनुभव साझा करे हुए बताया कि खीरा हर सलाद का जरूरी हिस्सा होता है। अपने देश में खीरे की फसल साल भर हो सकती है। खीरा भी किसानों के लिए नकदी फसल है। कम लागत और महज तीन माह में किसान इसकी फसल ले सकता है। जनवरी के आखिरी या फरवरी के पहले सप्ताह में किसान इसे अपने खेत में लगाकर अप्रैल तक बंपर पैदावार कर मालामाल हो सकते हैं। अब तो देश में खीरे की खेती पूरे वर्षभर संभव है। बारिश के साथ-साथ जनवरी के आखिरी सप्ताह से लेकर फरवरी में इसकी बोवनी कर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। 20 से 40 डिग्री के तापमान खीरे की खेती के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। पर किसानों पास पॉली हाउस है, तो तेज गर्मी में भी वो खीरे की खेती कर सकते हैं। एक किलो प्रति एकड़ बीज की जरूरत पड़ती है। पौधों से पौधों के बीच की दूरी 60 सेमी और क्यारी की दूरी आधा मीटर रखनी चाहिए। एक जगह दो बीज रखनी चाहिए।

किसान डालें गोबर की सड़ी खाद

किसानों को खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए। खीरे की फसल को अधिक पानी की जरूरत नहीं पड़ती है। दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त है। खेत की तैयारी के समय प्रति एकड़ खेत में 6 टन गोबर की सड़ी खाद डालनी चाहिए। 20 किग्रा नाइट्रोजन, 12 किग्रा फास्फोरस, 10 किग्रा पोटाश खाद की जरूरत पड़ती है। नाइट्रोजन का एक तिहाई हिस्सा, फास्फोरस व पोटाश के साथ बोवनी के समय देनी होती है। बचे हुए नाइट्रोज का आधा हिस्सा एक महीने बाद और शेष हिस्सा फूल आने पर देना होता है।

अच्छी पैदावार के लिए रोग से बचाएं

खीरे में फूल के समय वाइल्ड फ्लाई रोग लगता है। ये कीड़े पत्ते और फूल को नुकसान पहुंचाते हैं। इससे खीरे का आकार और उत्पाद प्रभावित होता है। ऐसा देखने पर तुरंत उचित सलाह के साथ कीटनाशक का प्रयोग करें। खीरा लता वाली फसल है। टमाटर की खेती करने वाले किसान भाई टमाटर का झाड़ का उपयोग इसकी लता को चढ़ाने के लिए कर सकते हैं।

टॉनिक से आएगी चमक

बाजार में अच्छी साइज और चमक वाले खीरे की मांग अधिक रहती है। गर्मी में न्यूनतम 10 रुपए किलो तक खीरा बिकता है। पर अच्छी किस्म के उत्पाद की कीमत 15 रुपए तक मिल जाती है। इसके लिए बाजार में अच्छे कंपनी का टॉनिक भी आता है। विशेषज्ञ की सलाह से खीरे की फसल में फूल से फल बनने की प्रक्रिया के दौरान इसका प्रयोग करने से अच्छी साइज और चमक मिलती है।

ड्रिप से करें सिंचाई

खीरे में अधिक पानी की जरूरत नहीं पड़ती है, लेकिन सूखी भी जमीन नहीं होनी चाहिए। दोनों ही परिस्थियों में पौधा सूख जाता है। सब्जी की खेती में पानी का बड़ा फैक्टर है। नमी हो तो पानी दें, नहीं तो पानी रोक दें। पत्ते देखकर भी पता चल जाता है कि पानी की कब जरूरत है। कोशिश करें कि ड्रिप सिस्टम लगाए। इसका फायदा ये है कि पानी के साथ खाद की भी बचत होगी और जहां जरूरत होती है, वहीं पर पहुंचता है। ड्रिप सिस्टम न होने पर जहां ढाल होता है वहां अधिक पानी व खाद पहुंच जाता है।

गौशाला में चौकीदार की तरह दिखाती है रौब

गौशाला में दस हजार गायों की रक्षक बनी गौरी मौसी

दिव्या मिश्रा, ग्वालियर।

पशुओं के प्रेम के कई किस्से-कहानियां आपने सुनी होंगी, लेकिन ग्वालियर की गौरी मौसी के बारे में आप नहीं जानते होंगे। ये गौरी मौसी ममता की मिसाल है। दरअसल हम बात कर रहे हैं ग्वालियर की लाल टिपारा गौशाला में रहने वाली एक अनोखी गाय की। वो मौसी नाम से पहचानी जाती है। यही नाम पुकारने पर वो दौड़ी चली आती है।

ममता और रुतबा ऐसा कि वो गौशाला की चौकीदार की तरह रौब दिखाती हैं। सबकी अम्मा गौरी मौसी... जी हां, मौसी की बात ही कुछ ऐसी है। ग्वालियर की लाल पिटारा गौशाला में रहने वाली गौरी मौसी काले रंग की गाय है। इसका खुद का कोई बच्चा नहीं है, लेकिन वो गौशाला में रहने वाली सभी गायों और उनके बछिया-बछड़ों की मौसी है। वो सबकी रखवाली करती है। सारे बछड़ों को दुलारने से लेकर उनकी हिफाजत करने का हर काम गौरी मौसी खुशी-खुशी करती है। अपने कुनबे के 10 हजार सदस्यों की देखरेख व मजबूत चौकसी करने वाली मौसी किसी सिक्यूरिटी ऑफिसर से कम नहीं है।

मां नहीं, लेकिन सबकी मौसी

यहां गौशाला में करीब 10 हजार गाय हैं। इनके साथ रहने वाली गौरी मौसी नाम की गाय सब की बड़ी अम्मा है। गौरी मौसी का खुद का बच्चा नहीं है, लेकिन ममता ऐसी कि दूसरी गायों के नवजात बछड़ों को प्यार से दुलारती है। गौरी मौसी सभी गायों के बछड़ों की देखभाल करती है। बाहर से कोई जानवर घुस जाता है तो उसे भगाती है। गौशाला और यहां आने वाले तीन साल पहले गौरी इस गौशाला में आई थी और इतनी जल्दी वो सबकी मौसी बन गयी। जब कोई इसे मौसी नाम से पुकारता है तो गौरी दौड़ी चली आती है। यही नहीं, ये सबको आगाह भी करती है।

संत मधुरेन्द्र आनंद, लाल टिपारा गौशाला

मौसी का अर्थ होता है मां के समान। गौरी भी गौशाला के कुनबे के लिए मां समान ही है। गौरी मौसी किसी सिक्यूरिटी ऑफिसर की तरह है। दिन हो या रात वो गायों के बाड़ों में घूम-घूम कर जायजा लेती रहती है।

अभिषेक, गौसेवक, लाल टिपारा गौशाला, ग्वालियर

खुशी हो या गम आगाह करती है मौसी

लाल टिपारा गौशाला में गौरी मौसी सभी के दिलों में राज करती है। गौशाला के 10 हजार गौवंश के बीच जब कोई गाय बछड़े को जन्म देती है, तो गौरी मौसी जोर जोर से आवाज लगाकर गौसेवकों को खुश खबरी देती है। रात हो या दिन गौशाला के किसी बाड़े में कोई जानवर घुस जाए तो गौरी मौसी उसे फौरन भगा देती है। कोई गाय अगर किसी दूसरी गाय के बच्चे को परेशान करती है तो गौरी मौसी उस गाय की जमकर खबर लेती है। लताड़ लगाकर भगा देती है। वो बच्चों को दुलारकर सुरक्षा का अहसास कराती है।

गायों में सीसा की विषाक्तता और रोकथाम के साथ नियंत्रण

पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन कॉलेज रीवा के डॉक्टरों ने बताए उपाय

रीवा। पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन कॉलेज रीवा के डॉ. राजीव रंजन, डॉ. स्वतंत्र सिंह, डॉ. अर्पिता श्रीवास्तव, डॉ. नितेश कुमार, डॉ. शेख टीजे, डॉ. नीलम टांडिया और डॉ. रिनेश कुमार ने बताए गायों में सीसी की विषाक्तता और रोकथाम के साथ नियंत्रण करना। विशेषज्ञों का कहना है कि पशु चिकित्सा क्षेत्र में सीसे के कारण होने वाली विषाक्तता भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह अधिकांशत: पशुओं में उनकी खान पान की आदतों के कारण पाई जाती है। प्राणियों में सीसा की विषाक्तता दुर्घटनावश सीसायुक्त यौगिकों खाद्य पदार्थों जिनमें पर्यावरण प्रदूषण रंगों ग्रीस इंजन ऑयल पेट्रोल व काम में ली जा चुकी बैटरी के संपर्क में आने, सीसायुक्त कीटनाशकों के उपयोग लेड ऐसिटेट आदि होते हैं। रंगों में लेड कारबोनेट, लेड सलफेट, लेड टेटराआक्साइड और पेट्रोल में टेटराइथाइल लेड पाए जाते हैं। पशुओं में होने वाली विषाक्तता में सीसे की विषाक्तता बहुत महत्वपूर्ण है जो गाय, भैंस, भेड, घोडों और कुत्तों को ही अधिक प्रभावित करती है। यह गायों में सर्वाधिक पाई जाने वाली विषाक्तता है। इनमें युवा गायों में अधिक प्रभावित होता है, क्योंकि इनमें किसी भी वस्तु को चाटने की उत्सुकता होती है, जिनके कारण वे दुर्घटनावश सीसे की अधिक मात्रा ग्रहण कर लेते हैं, जो उनके लिए विषकारक होती है। रोगग्रस्त प्रणियों में मृत्य दर 100 फीसदी तक पहुंच सकती है। अधिकांशत: सभी रंगों में सीसा पाया जाता है। कई औद्योगिक इकाइयों गाड़ियों द्वारा निकलने वाले धुएं मे सीसा होता है, जो वातावरण को प्रदूषित करते हैं। इस प्रकार वातावरण मे सीसे की मात्रा सड़कों व इससे संबंधित औद्योगिक इकाइयों के आस-पास अधिक पाई जाती है। वातावरण में सीसे के साथ कैडमियम साधारणत: जुड़ा हुआ पाया जाता है। दोनों का प्रभाव लगभग समान होता है। इसके अलावा कभी-कभी जस्ता भी इनसे संबंधित अपने प्रभाव दिखा सकता है। प्राणी शरीर में सीसा के रक्त, दुग्ध, ऊतको, यकृत व वृक्कों में पाया जा सकता है। सीसे के घुलनसील यौगिक जैसे लेड ऐसिटेट इसके अघुलनसील यौगिकों, जैसे लेड आक्साइड की तुलना में अधिक विषैले होते हैं।

रोगजनकता| एक प्राणी जितना सीसा ग्रहण करता है उनका कुछ ही भाग अवशोषित करता है। अधिकांशत: यह प्राणी के पेट मे इकट्ठा हो जाता है। मल मे निष्कासित होता रहाता है। इसके साथ ही इसकी मात्रा घुलनसील लेड ऐसिटेट में परिवर्तित होकर अवशोषित होकर विषैले प्रभाव प्रदर्शित करती रहती। अवशोषित हुआ सीसा रक्त में प्रवाहित होकर पित, दुग्ध व मूत्र मे उत्सर्जित होता रहता है। इसके अलावा इसकी ऐक्युट विषाक्तता में यह यकृत व वृक्कों तथा क्रोनिक विषाक्तता में अस्थियों एकत्र होता है।

कृषि वैज्ञानिक नहीं, खुद किसानों ने स्वीकारा

डिंडोरी में बीज बदलने से बढ़ गई फसलों की पैदावार

संवाददाता। डिंडोरी

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख पीएल अम्बुलकर के मार्गदर्शन में केंद्र की विशेषज्ञ श्वेता मसराम व कार्यक्रम सहायक अवधेश पटेल की उपस्थिति में राष्ट्रीय खाद सुरक्षा मिशन के अंतर्गत अंगीकृत विकासखंड करंजिया के ग्राम धनरास में रामतिल प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। यहां प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव को बताते हुए कहा कि पहले वे देशी बीज का उपयोग करते थे, जिससे कम उपज प्राप्त होती थी। इस वर्ष कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्राप्त बीज से अच्छी उपज मिलने की संभावना है। यह मात्र बीज बदलने व तकनीकी रूप से बोवनी व जैव उर्वरक का उपयोग से संभव हुआ है।

इसके अलावा अन्य किसानों ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि यहां पर धान की खेती के लिए मिट्टी उपयुक्त नहीं है। पथरीली भूमि पर रामतिल की फसल केंद्र के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में लहराई और अच्छी आमदनी प्राप्त होगी, जिससे आर्थिक रूप से विकास हो सकेगा। केंद्र से आए वैज्ञानिक व अधिकारियों ने किसानों के साथ भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान किसानों की आने वाली समस्याओं से अवगत हुए और उसका समाधान किया। बताया गया कि रामतिल की फसल विषम परिस्थितियों में भी उगाई जा सकती है। साथ ही इसकी विशेषता के बारे में बताया गया कि इसका तेल व बीज पूर्णता विषैले तत्वों से मुक्त रहता है। यह कीटों, बीमारियों, जंगली जानवरों व पक्षियों से होने वाली क्षति से कम प्रभावित होती है। रामतिल की फसल में औसत उपज बढ़ाने के लिए मधुमक्खी पालन का महत्व भी बताया गया, जिससे रामतिल की उत्पादकता 20 से 40 प्रतिशत तक बढ़ाई जा सकती है। कार्यक्रम सहायक उद्यानिकी अवधेश कुमार पटेल द्वारा उद्यानिकी पौधों व अंतर्वती खेती की उपयोगिता के बारे में बताया गया। रबी की फसलों को कीट व्याधियों से बचाने के लिए जानकारी दी गई। साथ ही सब्जी वर्गीय फसालों को पाले से बचाने के लिए मंलचिंग व धुआं करने की सलाह दी गई। कार्यक्रम में केंद्र की वैज्ञानिक गीता सिंह, डॉ. सत्येंद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी रेणू पाठक, कंप्यूटर, का सहयोग रहा।

किसानों को खेती में मिल रही मदद

इधर, शहपुरा में समाजसेवी संस्था रिलायंस फाउंडेशन लगातार किसानों के बीच कृषि संबंधी उन्नत जानकारी देकर लाभांवित कर रही है। जनपद शहपुरा अंतर्गत ग्राम डोभी के किसान किशोर कुमार कछवाहा ने बताया कि वह सब्जी भाजी का उत्पादन कर परिवार का भरण पोषण करते हैं। उन्होंने अपने खेत पर धनिया की फसल लगाई थी जिसमें पत्तियां पीले होने की समस्या आ रही थी। किसान ने रिलायंस फाउंडेशन के नि:शुल्क हेल्पलाइन नंबर पर फोन लगाकर अपनी धनिया की फसल में पीलेपन की समस्या के संदर्भ में विस्तृत जानकारी ली, जिससे समस्या का निराकरण हुआ। किसान को निश्चित समय पर सही परामर्श कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया, जिसका अनुसरण करते हुए उन्होंने धनिया की फसल को सुरक्षित कर लाभ कमाया है।

पशुपालक जलवायु के हिसाब से करें पशु का चयन

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केंद्र, शिवपुरी

पशुपालन को लाभकारी बनाने के लिए परंपरागत तरीके से करने की बजाय यदि आधुनिक वैज्ञानिक ढ़ंग से किया जाए तो कम खर्चे के साथ अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। इसके लिए मोटे तौर पर विशेष रूप से तीन बातों का ध्यान रखना जरूरी है। जिसके अंतर्गत पशुपालकों को पशु प्रजनन, खिलाई-पिलाई एवं सामान्य प्रबंधन के साथ पशु रोगों की जानकारी होना बहुत आवश्यक है। इन बातों का उचित ध्यान नहीं रखने पर अधिक खर्च करने के बाद भी पशुपालन लाभ का व्यवसाय नहीं बन सकता है।

दुग्ध उत्पादन के लिए गाय और भैंस में से किस पशु का पालन करना चाहते हैं, इसका निर्धारण पहले ही भली प्रकार से सोच समझकर बाजार की मांग के अनुरूप कर लेना बेहतर और फायदेमंद रहता है। हमेशा गाय-भैंस की ऐसी नस्लों का चुनाव करें जो कि उनके क्षेत्र और जलवायु के दृष्टिकोण से उपयुक्त हैं। गाय की भारतीय नस्लों में साहीवाल, गिर, राठी, रैडसिंधी, थारपारकर आदि ऐसी नस्लें हैं, जो कि दुग्ध उत्पादन के लिए सबसे बेहतर हैं। इनसे प्रतिदिन 10 से 12 लीटर तक औसत दुग्ध उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। विदेशी क्रॉस ब्रीड गायों में पैदा हो रहे रोग और बीमारियों तथा इसके दूध की उपयोगिता पर चल रही बहस को देखते हुए इनका पालन सोच समझ कर ही करना चाहिए। देशी भारतीय गायों के मूत्र, गोबर की बढ़ती उपयोगिता को देखते हुए तथा भारत सरकार द्वारा जैविक कृषि को बढ़ावा देने से भारतीय गायों की नस्लों के पालन को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देने की महत्ती अवश्यकता है।

देश में भैंस को मिल्किंग मशीन कहा जाता है। भैंस के दूध में वसा प्रतिशत की अधिक मात्रा के कारण इसके दूध की मांग पूरे उत्तर भारत में सबसे ज्यादा है। दुग्ध उत्पादन के लिए भैंस की मुर्रा नस्ल सबसे बेहतर विकल्प है। इसके अलावा नीली रावी नस्ल की भैंस भी दुग्ध उत्पादन में अच्छी मानी गई है। इन नस्लों का वैज्ञानिक ढ़ग से पालन करने पर 12 से 14 लीटर तक दुग्ध उत्पादन हर रोज प्राप्त किया जा सकता है। इन नस्लें के पशु हमेशा विश्वसनीय और भरोसेमंद स्थानों और पशु पेठों से ही खरीदने चाहिए। हरियाणा, पंजाब और पश्चिमी उप्र में भैंस और गायों की शुद्ध नस्लें प्राप्त की जा सकती हैं। हरियाणा की जींद की पशु मंडी, रोहतक और हिसार आदि जनपदों में भैंस की यह शुद्ध नस्लें प्राप्त की जा सकती हैं। पशुपालक नस्ल सुधार के माध्यम से भी अपनी देशी और दोगली किस्म की गाय-भैंसों का नस्लों का सुधार करके उन्हें उन्नत नस्ल में बदल सकते हैं। इसके लिए गाय भैंस को हमेशा कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से ही गर्भित कराना चाहिए। प्राकृतिक गर्भाधान की दशा में स्वस्थ और उन्नत नस्ल के सांड से ही गर्भाधान को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस तरीके से कुछ ही वर्षों में देशी पशुओं की नस्ल सुधार करके मनवांछित सफलता पाई जा सकती है। पशुओं को जब तक अच्छा पौष्टिक गुणों से भरपूर चारा दाना नहीं खिलाया जाता है तब तक उनसे बेहतर उत्पादन की उम्मीद नहीं की जा सकती है। पशुपालन में 60 प्रतिशत से अधिक खचाज पशुओं की खिलाई-पिलाई पर ही होता है। इसलिए इस खर्चे को कम करने के साथ ही चारे दाने से आवश्यक पौषक तत्वों की पूर्ति कैसे की जाए इस बात का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। पशुओं विशेषकर दुग्ध उत्पादन तथा वृद्धि करने वाले ओसर मादा पशुओं को संतुलित आदर्श राशन के साथ संतुलित हरा चारा नियमित उनकी आवश्यकता के अनुरूप देने की जरूरत है। दुधारू पशुओं से सस्ता और भरपूर दुग्ध उत्पादन प्राप्त करने के लिए सूखे चारे भूसा आदि की जगह अधिक से अधिक हरा चारा खिलाने से आहार पर आने वाली लागत कम होती है। सूखे चारे की तुलना में हरा चारा खिलाने से दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है जिसके फलस्वरूप अधिक मुनाफा प्राप्त होता है। इसलिए पशुपालक ऐसी कार्य योजना बनाएं कि उन्हे वर्षभर भरपूर हरा चारा मिलता रहे। संतुलित हरे चारे के लिए फलीदार एवं बेफलीदार चारा फसलों को समान रूप से उगाएं। पशुओं से उनके कार्य के अनुरूप अधिक से अधिक उत्पादन एवं समुचित वृद्धि प्राप्त करने के लिए उन्हें नियमित तौर पर संतुलित आहार देने की जरूरत पड़ती है। इसके लिए शरीर रक्षा से लेकर दूध उत्पादन, वृद्धि एवं विकास तथा गर्भ रक्षा के लिए अलग-अलग मात्रा में आहार की जरूरत होती है। पशुओं को उनकी आवश्यकता के अनुरूप ही आहार का निर्धारण करके खिलाना चाहिए। पशुपालक अपने घर पर ही सस्ता और पौष्टिक संतुलित आहार बनाकर पशुओं को खिला सकते हैं। पशुओं को दिन में लगभग दो बार चारा-दाना देना चाहिए और इसके मध्य 8 से 10 घण्टे का अंतराल होना आवश्यक है। चारे-दाने का प्रकार एकदम नहीं बदलना चाहिए। बदलने के लिए धीरे-धीरे चारा दाना खिलाने की आदत डाले जिससे उसकी भोजन प्रणाली पर कोई कुप्रभाव न पड़े। दाना सदैव पहले खिलाकर बाद में सूखा या हरा चारा पशुओं को देना चाहिए। पशुओं को प्रतिदिन तीन से चार बार स्वच्छ एवं ताजी पानी पिलाना चाहिए। संभव हो तो दुधारू एवं ओसर मादा पशुओं को नियमित चारागाह में कुछ समय के लिए चराने अवश्य ले जाएं जिससे इनका व्यायाम होता रहे। दुधारू पशुओं के शरीर पर नियमित तौर से हर रोज खुरैरा करना चाहिए इससे पशु के शरीर में स्फूर्ती आने के साथ खून का बेहतर संचार बना रहता है। पशुओं का आवास बनाते समय यह ध्यान रखें कि उसमें आंधी, वर्षा, सर्दी, गर्मी आदि की सुरक्षा का पूर्ण प्रबंध हो। पशुशाला में पशुओं के आराम से उठने-बैठने तथा खिलाई-पिलाई की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। पशुशाला एवं पशुओं की नियमित सफाई करना आवश्यक होता है। पशुओं को गर्मियों में लगभग हर रोज तथा सर्दियों में धूप निकलने पर तीन-चार दिन के अंतराल पर रगड़कर नहलाते रहना चाहिए। पशुशाला में सप्ताह में एक बार चूने के प्रयोग के अलावा फिनायल आदि का घोल छिड़काव करने से कीटाणुओं से बचाव होता है। **पशुपालन में अंत: एवं वाह्य:** परजीवी पशुओं को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। इनसे होने वाले नुकसान में बड़े पैमाने पर, पैदा होने के बाद एक साल के भीतर नवजात लवारों की मौत, दुग्ध उत्पादन में भारी गिरावट और पशुओं के शरीर में खून की कमी, बांझपन जैसी समस्या, लगातार दस्त और डायरिया का होना जैसे प्रमुख घातक प्रभाव देखने को मिलते हैं। यह पशुओं के शरीर में कई प्रकार की बीमारी पैदा करने के कारण भी बन जाते हैं। इसलिए इनका समय-समय पर निदान करना आवश्यक हो जाता है। पशुओं में संक्रामक रोग जानलेवा सिद्ध होकर उन्हें मौत के घाट उतार देते हैं। इन रोगों में गलघोंटू अर्थात घुर्रका, खुरपका-मुहंपका, ऐन्थ्रक्स, लगड़िया, रिंडरपेस्ट आदि हैं। पशु यदि एक बार इन रोगों की पकड़ में आ जाएं तो समय पर चिकित्सा नहीं मिलने पर उनकी मौत तक हो जाती है। अत: इन रोगों के बचाव के लिए समय-समय पर रोगरोधी टीकाकरण कराते रहने से इन रोगों पर पूरी तरह काबू पाया जा सकता है। ब्याने के बाद यदि गाय-भैंस तीन माह तक गर्मी पर नहीं आती हैं या फिर बार-बार गर्मी पर आने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है तो उसके गर्भाशय की जांच कराकर, कमी होने की दशा में बांझपन चिकित्सा करानी चाहिए। वरना ब्यांत की अवधि बढ़ने पर आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। गाय-भैंस के गर्मी के लक्षण प्रकट करने के बाद उसे तत्काल गर्भित न कराकर गर्मी में आने के 12 से 24 घंटे बीच में ही गर्भित कराना चाहिए। यह कुछ ऐसी उपयोगी बातें हैं जिनका ध्यान रखकर पशुपालन को लाभकार बनाया जा सकता है।

राइजोबियम कल्चर से बढ़ाएं उपज

आशुतोष मिश्र
मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, कृषि संकाय, म.गॉ.चि.ग्रा.वि.वि., चित्रकूट, सतना, म.प्र.

दलहनी फसलों की अधिक उपज एवं मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए राइजोबियम कल्चर जैव उर्वरक अवश्य प्रयोग करें। खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में नि:संदेह हमारा देश आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। परन्तु देश की बढ़ती जनसंख्या के सापेक्ष में खेती का रकबा लगातार घटता जा रहा है, जिससे अब उत्पादन में वृद्धि होना जरूरी है।

बढ़ती हुई जनसंख्या घटते हुई कृषि क्षेत्र के कारण कृषि उत्पादन क्षमता को बनाए रखना हमारे देश के कृषि वैज्ञानिकों एवं किसानों के लिए चिंतन का विषय है। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि रासायनिक उर्वरकों के लिए कच्चे माल की लगातार कमी होने के कारण उर्वरकों के मूल्य आसमान छू रहे हैं। महंगाई के इस समय में फसलों को नाइट्रोजन पोषक तत्व की पूर्ति केवल रासायनिक उर्वरकों से कर पाना छोटे एवं मध्यम किसानों की खरीद क्षमता से परे है। इसलिए हमारे देश के कृषि वैज्ञानिक इसके अन्य विकल्पों पर शोध करके विभिन्न फसलों के लिए जैव उर्वरकों की खोज की जो हमारी फसलों उत्पादन क्षमता के साथ ही साथ मिट्टी की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाती है। इस प्रपेक्ष में राइजोबियम कल्चर जैव उर्वरक का दलहनी फसलों पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करते हैं। मिट्टी में विभिन्न तरह के सूक्ष्म जीवाणु होते हैं। इनमें से कुछ जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर पौधे को प्रदान करते है। मिट्टी में इन सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बहुत कम होती है। राइजोबियम जीवाणु दलहनी फसलों की जडों में छोटी-छोटी हल्के गुलाबी रंग की जड़ ग्रथियों में सहजीवी रूप में रहते है। राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को सामान्य ताप व दाव पर अपनी जैविक क्रियाओं द्वारा अमोनिया में बदल देते हैं। अच्छे राइजोबियम जैव उर्वरक के उपयोग से गुलाबी रंग की ग्रथियां अधिक संख्या में बनती है। जिनमें लैग हीमोंग्लोविन पदार्थ होता है और ऐसी गुलाबी रंग की ग्रथियां ही सक्रिय होती हैं। राइजोबियम जीवाणुओं की अनेक किस्में होती हैं। प्रत्येक फसल के लिए अलग-अलग किस्म के राइजोबियम जीवाणु होते हैं। जैसे सोयाबीन के लिए राइजोबियम जापोनिकम, क्लोवर समूह के लिए राइजोबियम लेग्यूमीनोसेम, राइजोबियम कल्चर दलहनी फसलों के अनुसार अलग-अलग होता है। अत: अभीष्ट परिणामों के लिए प्रत्येक फसल के लिए निर्धारित कल्चर ही उपयोग किया जाता है। बीज उपचार के लिए 200 ग्राम राइजोबियम जैव उर्वरक को 400-500 मिली लीटर पानी में अच्छी तरह घोल बना लें। घोल एक एकड़ भूमि के बीजों के लिए पर्याप्त होता है। उपरोक्त घोल 10-15 किग्रा दलहनी बीजों के ऊपर धीरे-धीरे डालकर कर हाथ से तब तक मिलाते रहते हैं, जब तक एक पतली पर्त बीज के ऊपर न चढ़ जाए। उपचारित बीजों को किसी साफ बोरी या फर्श के छायादार स्थानों पर फैलाकर सुखा लें। उपचारित बीजों को उसी दिन शाम के समय बोवनी कर देना चाहिए। कंद उपचार के लिए 1-2 किग्रा जैव उर्वरक को 10-12 लीटर जल में घोल बनाएं। एक एकड़ पौध जड़ के लिए या 10 कुंतल कंद उपचार के लिए पर्याप्त होता है। घोल में कंद की जड़ों को 10-15 मिनट तक डुबों कर रखें। इसके बाद इनकी रोपाई या बोवनी कर देना चाहिए। 2-3 किग्रा जैव उर्वरक को 10-60 किग्रा कम्पोस्ट भुरभुरी मिट्टी में मिश्रण तैयार कर एक एकड़ खेत में आखिरी जुताई के समय या फिर फसल में पहली सिंचाई के पूर्व समान रूप से खेत में छिड़क दें। इस बात का विशेष ध्यान दें कि जैव उर्वरक का पैकेट को धूप, धूल एवं गर्मी से दूर किसी ठंडी एवं सूखी स्थानों पर ही भंडार करना चाहिए। प्रत्येक फसल के लिए निर्धारित जैव उर्वरक का ही उपयोग करें। अंतिम प्रयोग तिथि से पहले ही जैव उर्वरक पैकेट का उपयोग कर लें। उपचारित बीजों की बोवनी तुरन्त करें। मिट्टी एवं फसल के अनुसार फास्फोरस की मात्रा का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

राइजोबियम जैव उर्वरक द्वारा विभिन्न दलहनी फसलों के उपज में औसतन वृद्धि जैसे अरहर की फसल में 19 प्रतिशत, मूंग, उरद की फसल में 20 प्रतिशत, लोबिया की फसल में 23 प्रतिशत, मसूर की फसल में 32 प्रतिशत मटर की फसल में 18 प्रतिशत, मूंगफली की फसल में 19 प्रतिशत, सोयाबीन की फसल में 35 प्रतिशत तथा बरसींग की फसल में 30 प्रतिशत प्राप्त होता है।

रोजगार की उड़ान

रोजगार के क्षेत्र में नवीनता का अपना महत्व है। बढ़ते मानव संसाधन के साथ रोजगार के नए अवसर ढूंढना ही समझदारी है। ड्रोन के उपयोग और उससे जुड़ा प्रशिक्षण नई राह दिखाने में सक्षम है। इसका लाभ लेने से चूकना नहीं चाहिए। प्रदेश के पांच जिलों में ड्रोन स्कूल खोले जाने की नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की घोषणा रोजगार के क्षेत्र में एक उड़ान की तरह होगी। ग्वालियर, भोपाल, इंदौर, जबलपुर एवं सतना में प्रस्तावित इन स्कूलों में प्रशिक्षण लेकर 12वीं पास विद्यार्थी ड्रोन पायलट बन सकते हैं। वे इन्हें उड़ाने का प्रशिक्षण लेने के साथ ही इसकी तकनीक भी सीख सकते हैं। अनुमान है कि ड्रोन के बढ़ते उपयोग के साथ तीन लाख रोजगार सृजित होंगे। नई तकनीक से संबंधित होने से यह भी तय है कि इसका विकास होगा और अवसर बढ़ेंगे ही। ड्रोन अपनी उपयोगिता कई अहम क्षेत्रों में साबित कर चुके हैं। फिलहाल केंद्र और राज्य सरकार का फोकस कृषि के क्षेत्र में ड्रोन का उपयोग बढ़ाना है। खाद-कीटनाशक छिड़काव में ये उपयोगी व श्रम और समय बचाने वाले साबित हो चुके हैं। नई किस्म की खाद नैनो (तरल) यूरिया का ड्रोन बेहतर ढंग से छिड़काव करते हैं। सरकारी नक्शे बनाने हों, जमीन का सीमांकन हो या फिर रेलवे के ब्रिज व पटरियों की तस्वीर लेनी हो। ड्रोन बड़ी आसानी से फोटो व डाटा एकत्र करने का काम कर रहे हैं। ग्वालियर में आयोजित मेले में कई तरह के ड्रोन देखकर उत्साहित मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि यह लोगों का जीवन बदलने वाला है। रोजगार के क्षेत्र में नवीनता का अपना महत्व है। बढ़ते मानव संसाधन के साथ रोजगार के नए अवसर ढूंढना ही समझदारी है। जब नीति-नियंता इस तरह की भावना रखेंगे तब ही लोगों को जनसंख्या या आबादी नहीं बल्कि मानव संसाधन के रूप में पहचान मिलेगी। ड्रोन पहले से चले आ रहे कई व्यवसायों की कार्यक्षमता बढ़ाने में मददगार हुए हैं। शादियों और विभिन्न समारोह में उड़ते हुए ड्रोन फोटोग्राफी कर रहे हैं और यह महज नई तकनीक को स्वीकार करने से संभव हुआ है। भारत सरकार ने ड्रोन या मानव रहित हवाई प्रणाली (यूएएस) के उपयोग और संचालन को विनियमित करने के लिए उदारीकृत ड्रोन नियम-2021 लागू भी कर दिए गए हैं। अब एक नया बाजार या क्षेत्र उत्साही लोगों का इंतजार कर रहा है। ड्रोन को किराए पर भी दिया जा सकता है। इस तरह स्वरोजगार की दिशा में भी संभावनाएं बनी हैं। इसका प्रशिक्षण बारहवीं पास युवाओं को दिया जा सकेगा यानी इसे करियर के रूप में अपनाने वाले लोग भी जल्द शुरुआत करेंगे और अपेक्षाकृत जल्दी आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

बिना किसी विशेष देखभाल के भी आसानी से की जा सकती है उन्नत खेती

दिसंबर और जनवरी में करें इन फसलों की खेती, होगा भरपूर मुनाफा

संवाददाता। भोपाल

जैसे-जैसे सर्दियां आनी शुरू होती है, वैसे-वैसे फसलों की भी रंगत बदलने लगती है। सर्दियों में गर्मियों से हटकर फसलों की खेती करने से किसानों को अच्छा मुनाफा हो सकता है। लेकिन कई लोगों को यह पता नहीं होता की ठंड के मौसम में कौन सी फसलें उगाई जा सकती हैं, जिससे उन्हें अधिक मुनाफा मिल सकेगा। इन फसलों को विशेष सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वे आसानी से लगाए जाते हैं और कठोर सर्दियों के दिनों में भी आसानी से उनकी देखभाल की जा सकती है।

विटामिन और मिनरल्स का खजाना, औषधीय गुणों से भरपूर ये फसलें

बैंगन: दिसंबर-जनवरी का महीना सभी प्रकार की बैंगन की खेती के लिए सबसे अच्छा है। इसकी फसल को कम से कम 6 घंटे धूप, समृद्ध दोमट मिट्टी और अच्छी जल निकासी की आवश्यकता होती है। वे जल्दी बढ़ते हैं और कुछ ही हफ्तों में हम उन्हें काट सकते हैं। यह आमतौर पर खाना पकाने में सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है।

शलजम: ठंड के मौसम में होने वाली अधिकतर फसलें खनिज से भरपूर होती है। शलजम की बात करें तो इसे एंटी-ऑक्सीडेंट, मिनरल और फाइबर का बहुत अच्छादित माना जाता है। इसके अनेकों फायदे हैं, इसके सेवन से हृदय रोग, कैंसर, उच्च रक्तचाप और सूजन में इसका इस्तेमाल किया जाता है। शलजम में मौजूद विटामिन शरीर के लिए बहुत आवश्यक है। ये आपके शरीर की इम्युनिटी सिस्टम को मजबूत करने में आपकी मदद करता है।

भिंडी: यह एक और सर्दियों की सब्जी है जो सब्जी के बगीचे के लिए सबसे उपयुक्त है। यह हर प्रकार के खेत में यानी गर्म और नम दोनों स्थितियों में अच्छी तरह से बढ़ता है। हालांकि आदर्श रूप से, जनवरी-मार्च में इसको विस्तार करने का सबसे अच्छा समय है। साथ ही यह सुनिश्चित करें कि भिंडी उगाने के लिए खाद मिट्टी भी अत्यधिक समृद्ध हो।

पालक: इस मौसम में पालक की खेती करने भी काफी अच्छा माना जाता है। बता दें कि इससे पोषण, कैल्शियम, विटामिन और खनिजों की भी आपूर्ति की जाती है। जनवरी का ठंडा मौसम बुवाई के 6-8 सप्ताह के भीतर पालक उद्यान शुरू करने का सबसे अच्छा समय है।

गाजर: इस मौसम में आप गाजर की खेती भी कर सकते हैं। खास बात तो यह है कि गाजर को हमेशा मानव स्वास्थ्य के लिए आदर्श भोजन कहा गया है। गाजर में विशेष रूप से बीटा-कैरोटीन, विटामिन के 1, कार्बोहाइड्रेट और एंटीऑक्सिडेंट पाए जाते हैं। इसकी किस्म के आधार पर बीज की बोवनी के 80-100 दिनों में खाने योग्य जड़ों को काटा जा सकता है।

लौकी: इस फसल की भी कई किस्में होती हैं, और सभी इस मौसम के लिए अनुकूल है। इसे कैलाश फल के रूप में भी जाना जाता है। लौकी दुनिया भर में मुख्य रूप से भोजन के लिए ही नहीं बल्कि अच्छी खपत वाली सब्जी भी मानी जाती है। जनवरी में भी लौकी लगाना अच्छा होता है। ये ऐसे पौधे हैं जिनका उत्पादन करना आसान है।

समसामयिक सलाह और फसल के लिए उपचार

ठंड के मौसम में होने वाली सब्जियों को रोगों से बचाने के कारगर उपाय

संवाददाता। भोपाल

सर्दियों में सब्जियों की फसल में लगने वाले कई ऐसे प्रमुख रोग हैं, जिनपर ध्यान न दिया जाए तो सारी मेहनत पर पानी फेर सकते हैं।

भूरी गलन अथवा लाल सड़न रोग: गोभी में लगने वाले इस रोग में उचित जल निकासी नहीं होने पर पौधों की जड़ गल जाती है और पौधे की जड़ रंग लाल-भूरा हो जाता है। रोकथाम के लिए खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। ट्राइकोडर्मा विरिडी की 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर पौधे के तने के पास दें, या रासायनिक कार्बेडजिम 50 प्रतिशत डब्लूपी की 2 ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी में मिलाकर जमीन में तने के पास डालें। रोग अधिक हो जाने की स्थिति में थियोफिनेट मिथाइल 70 डब्लूपी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर जड़ों के पास डेंचिंग करें।

आर्द्रगलन रोग: इस रोग से छोटे पौधे संक्रमित हो जाते हैं। तने का निचला भाग जो जमीन की सतह से लगा रहता है गल जाता है और पौधे वहीं से टूटकर गिर जाते हैं।

इस रोग की रोकथाम के लिए बीज को बोने से पहले कार्बेंडाजीम फफूंदनाशी दो ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। खड़ी फसल में प्रकोप हो जाने पर करें कार्बेण्डाजीम 12 प्रतिशत+मैंकोजेब 63 प्रतिशत डब्लूपी की 400 ग्राम या कार्बेण्डाजीम 50प्रतिशत डब्लूपी की 200 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर जड़ के पास देवे। अथवा कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

काला सड़न: इससे फसल गल जाती है तथा तने को चीरने पर कालापन दिखाई देता है। प्रभावित पौधा मुरझा कर मर जाता है। इस रोग से बचाव के लिए स्ट्रिपोसाइक्लिन 2.5 ग्राम अथवा कार्बेंडाजीम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

झुलसा रोग: इस रोग में फसल झुलसी हुई दिखाई देती है। शुरुआत में मेंकोजेब 75 डबल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर में घोल बनाकर छिड़काव करें। अधिक रोग दिखाई देने पर मेटालेक्सल 4प्रतिशत + मेंकोजेब 64 प्रतिशत डब्लूपी 600 ग्राम या मेटालेक्सल 8प्रतिशत+ मेंकोजेब 64 प्रतिशत डब्लूपी 500 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर दें।

पत्ती धब्बा रोग: यह रोग जीवाणु से होता है अत: इससे रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 90 प्रतिशत + टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत डब्लू डब्लू 24 ग्राम/ एकड़ या कसुगामाइसिन तीन प्रतिशत एसएल 300 मिली/ एकड़ या कसुगामाइसिन 5 प्रतिशत+कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 45 प्रतिशत डब्लूपी 250 ग्राम/ एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सूत्रकृमि: ये सूत्रकृमि (नेमाटोड्स) जड़ों पर आक्रमण करते हैं एवं जड़ में छोटी छोटी गाँठ बना हैं। सूत्रकृमि से ग्रसित पौधों की वृद्धि रुक जाती है एवं पौधा छोटा ही रह जाता है। इसका अधिक संक्रमण होने पर पौधा सुखकर मर जाता है। इसके नियंत्रण के लिए कार्बोफ्युरोन 3 फीसदी या नीम खली के साथ पेसिलोमाइसिस लिनेसियस का उपयोग मिट्टी उपचार के लिए करें।

विषाणु रोग: मिर्च की फसल में सबसे अधिक नुकसान पत्तियों के मुड़ने वाले रोग से होता है। यह रोग वायरस/ विषाणुजनित होता है जिसे फैलाने का कार्य रस चूसने वाले छोटे छोटे कीट करते है। ये रसचूसक कीट अपनी लार से या सम्पर्क में आने से एक स्थान से दूसरे स्थान यह रोग फैलाते हैं। मिर्च की पत्तियां ऊपर की ओर मुड़ कर नाव का आकार हो जाता है तथा जिसके कारण पत्तियां सिकुड़ जाती है और पौधा झाड़ीनुमा दिखने लगता है। रोकथाम के लिए स्पीनोसेड़ 45 एससी नामक कीटनाशी की 75 मिली मात्रा या फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एससी की 400 मिली मात्रा या एसिटामिप्रीड 20 प्रतिशत एसपी की 100 ग्राम मात्रा या एसीफेट 50 प्रतिशत + इमिडाक्लोप्रिड 1.8 प्रतिशत एसपी की 400 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ खेत में छिड़काव कर दें।

टमाटर की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग

सूत्रकृमि : सूत्रकृमि के जैविक नियंत्रण के लिए 2 किलो वर्टिसिलियम क्लैमाइडोस्पोरियम या 2 किलो पैसिलोमयीसिस लिलसिनस या 2 किलो ट्राइकोडर्मा हरजिएनम को 100 किलो अच्छी सड़ी गोबर के साथ मिलाकर प्रति एकड़ की दर से अंतिम जुताई के समय भूमि में मिला दें। सूत्रकृमि प्रतिरोधी किस्म का चयन करके सूत्रकृमि को नियंत्रित किया जा सकता है। टमाटर के लिए हिसार ललित, पूसा-120, अर्का वरदान, पूसा -2,4, पीएनआर-7, कल्याणपुर 1,2,3 है। झुलसा रोग इस रोग के लगने पर पेड़ों को पत्तियों पर भूरे पीले रंग के धब्बे बन जाते हैं और पत्तियां किनारों पर से सुखकर सिकुड़ने लगती है। जिससे पेड़ झुलसा हुआ नजर आता है। इसकी रोकथाम के लिए मेंकोजेब 75 डब्लूपी की 2 ग्राम प्रति लीटर की दर छिड़काव करना चाहिए। जैविक उपचार के रूप में ट्राइकोडर्मा विरिडी 500 ग्राम/एकड़ या स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस 250 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

पर्ण-कुंचन रोग रोगी पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ जाती हैं और फलस्वरूप ये उल्टे प्याले जैसी दिखायी पड़ती हैं, जो पर्ण कुंचन रोग का विशेष लक्षण है। पतियां मोटी, भंगुर और ऊपरी सतह पर अतिवृद्धि के कारण खुरदरी हो जाती हैं। रोगी पौधों में फूल कम आते हैं। रोग की तीव्रता में पतियां गिर जाती हैं और पौधे की बढ़वार रुक जाती है। यह पर्ण कुंचन रोग विषाणु के कारण होता है तथा इस रोग का फैलाव रोगवाहक सफेद मक्खी के द्वारा होता है। रोगवाहक कीट के नियंत्रण के लिए डाइफेनथूरोंन 50 प्रतिशत डब्लूपी 15 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी की में घोलकर पत्तियों पर छिड़काव करें। या पायरिप्रोक्सिफेन 10 प्रतिशत + बाइफेन्थ्रिन 10प्रतिशत ईसी 15 मिली या एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एसपी 8 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर पत्तियों पर छिड़काव करें। 15-20 दिनों बाद छिड़काव दुबारा करें तथा कीटनाशक को बदलते रहें।

-35 हजार था लक्ष्य, 51 हजार हेक्टेयर से अधिक में हो गई बोवनी

नर्मदापुरम में चना की रिकॉर्ड बोवनी

-कुल बोवनी का लक्ष्य 3 लाख 30 हजार हेक्टेयर का तय किया गया

-होशंगाबाद में इस बार गेहूं की 2 लाख 10 हेक्टेयर में बोवनी हो चुकी

पंकज शुक्ला,नर्मदापुरम।

जिले में रबी मौसम की बोवनी समापन की ओर, इस बार चना की बोवनी में जिले में रिकॉर्ड बन गया है। गेहूं की बोवनी लक्ष्य से कम है। विभाग का मानना है कि अभी गेहूं की बोवनी के लिए एक सप्ताह का समय और बचा है। खरीफ मौसम की मुख्य फसल धान की कटाई और पलेवा होने के साथ ही रबी मौसम की बोवनी तेज गति से हुई है। कुछ किसानों ने तो दीपावली पूर्व से बोवनी शुरू कर दी थी। इस बार कुल बोवनी का लक्ष्य 3 लाख 30 हजार हेक्टेयर का तय किया गया है। चने की बोवनी लक्ष्य से अधिक हो चुकी है। गेहूं का लक्ष्य अभी कम रह गया है। विभाग मान रहा है कि अभी इस सप्ताह के अंत तक बोवनी की जा सकती है।

51 हजार से अधिक में लहलहा रहा चना- विभाग के द्वारा चने का लक्ष्य इस बार 25 हजार से बढ़ाकर 35 हजार हेक्टेयर का तय किया गया था। किसानों का रुझान बीते वर्ष से चना की ओर बढ़ रहा है। चने के दाम भी अच्छे मिलने तथा तीसरी फसल मूंग की बोवनी के लिए चना की बोवनी की ओर किसानों का रुझान तेज हुआ है। इसलिए इस बार चना की बोवनी पिछले रिकॉर्ड तोड़ते हुए 51 हजार 640 हेक्टेयर हो गई है।

गेहूं की बोवनी हुई कम

चने का रकबा बढ़ने से इस बार गेहूं का रकबा कम रह गया है। बोवनी के लिए अब गिने चुने दिन ही बचे हैं। क्योंकि जिनको गेहूं बोना था उन्होंने धान काटने के तुरंत बाद गेहूं की बोवनी कर दी है। अब तो जिनकी धान बाद में कटी है उनकी ही रह गई है। जिले में इस बार गेहूं का लक्ष्य 2 लाख 85 हजार हेक्टेयर का तय हुआ था। जिसमें से अभी तक 2 लाख 10 हेक्टेयर में बोवनी हो चुकी है।

जिले में इस बार हर ब्लाक में चने की बोवनी हुई है। कुछ क्षेत्रों में गेहूं की बोवनी रह गई थी जो अंतिम चरण में है। जिन क्षेत्रों में कटाई के बाद पलेवा हो गया है वहां पर गेहूं बोवनी हो रही है। सभी फसलों का लक्ष्य पूरा होने के साथ चना की इस बार लक्ष्य से अधिक बोवनी हो चुकी है।

जेएस कादसदे, सहायक संचालक, कृषि

इस बार किसानों का रुझान दलहनी फसलों की ओर ज्यादा नजर आ रहा है। चना का रकबा बढ़ने के साथ ही मसूर दो हजार हेक्टेयर से अधिक में तथा मटर 500 हेक्टेयर में बोवनी हो चुकी है। तिलहन में सरसों की बोवनी 1 हजार 200 हेक्टेयर में हो चुकी है।

किशोर उमरे, कृषि विस्तार अधिकारी

क्या कहते हैं किसान

चना की बोवनी करना इसलिए फायदेमंद है क्योंकि एक तो चना की फसल जल्दी आ जाती है दूसरी ओर उसमें खाद पानी गेहूं से कम देना पड़ता है। दाम भी गेहूं से अधिक मिल जाते हैं।

नरेंद्र पटेल, किसान

चना की बोवनी जल्दी होने से कटाई भी जल्दी हो जाती है जिससे ग्रीष्मकालीन मूंग की बोवनी समय पर हो जाती है। उससे मूंग की कटाई मानसून आने से पूर्व हो जाती है। इसलिए चना का रकबा बढ़ता जा रहा है।

उदय पांडेय, किसान

गेहूं की फसल पड़ने लगी पीली, तो करें उपचार

भोपाल। देश के कई हिस्सों में गेहूं की खेती करने वाले किसानों की फसल पीली पड़ने लगी है। किसान फसल में फैल रहे इस रोग से काफी चिंतित हैं। ऐसे में कृषि विज्ञान केंद्र सोहना के कृषि वैज्ञानिक मारकंडेय सिंह ने बताया कि गेहूं का पीलापन दो प्रकार का होता है। इसमें कई बार केवल पत्ते ही पीले होते हैं। यह रोग ठंड व कोहरे के कारण होता है, जबकि गेहूं के पत्तों में हाथ लगाने से पीला पाउडर हाथ में लगना शुरू हो जाए, तो यह फसलों के लिए गंभीर हो सकता है। उन्होंने कहा कि गेहूं के पत्ते में ठंड व कोहरे से आया पीलापन तेज धूप से दूर हो जाता है। उन्होंने किसानों को फसलों में यूरिया का छिड़काव करने की सलाह दी है। कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक किसानों को गेहूं की फसल पर यूरिया के साथ जिंक सल्फेट का छिड़काव करने को कहा है। इस वक्त गेहूं की फसल के आसार अच्छे दिखाई दे रहे हैं। यूं तो किसानों को खाद की कमी खल रही है। चालू सीजन में क्षेत्र में लगभग 33 हजार हेक्टेयर में गेहूं की फसल की बोवनी की गई थी। गेहूं की फसल में इस वक्त दूसरा व तीसरा पानी लगाया जा रहा है। क्षेत्र के कई गांवों में गेहूं की फसल की पत्तियां पीली पड़ने लगी हैं।

बलराम तालाब के लिए आवेदन आमंत्रित

भोपाल। मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजनांतर्गत कृषि के समग्र विकास के लिए सतही एवं भूमिगत जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बलराम ताल योजना किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के माध्यम से संचालित है। योजना का लाभ उठाने के लिए ऑनलाइन आवेदन किए जा सकते हैं। इस योजना से समस्त वर्गों के किसानों को लाभान्वित किया जाएगा। निजी भूमि पर बलराम तालाब निर्माण के लिए वे ही कृषक पात्र होंगे जिनके पास वित्तीय वर्ष 2017-18 एवं उसके पश्चात प्रदेश में विभाग द्वारा संचालित किसी भी योजना के माध्यम से ड्रीप या स्प्रींकलर सेट की स्थापना की गई हो और वर्तमान में वह चालू स्थिति में हो। इस योजना में सामान्य किसानों को अपने खेतों में बलराम ताल निर्माण के लिए स्वीकृत लागत का 40 प्रतिशत या अधिकतम 80 हजार रुपए, लघु सीमांत कृषकों को स्वीकृत लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतक 80 हजार रुपए और अनुसूचित जाति या जनजाति के कृषकों को स्वीकृत लागत का 75 प्रतिशत या अधिकतक 1 लाख रुपए अनुदान की पात्रता है। अतिरिक्त लगने वाली व्यय राशि का वहन स्वयं किसानों को करना होगा।

किसान पाला से अपनी फसल का बचाएं

भोपाल। कृषि विज्ञान केंद्र, केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान नवी बाग भोपाल के कृषि विशेषज्ञ भी बदलते मौसम को लेकर चिंत हैं। प्रदेश में पड़ रही रिकॉर्डतोड़ चलते किसानों की फसलों पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। इसे देखते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को कुछ अहम सुझाव व बचाव के उपाए बताए हैं। उनका कहना है कि सर्दी के मौसम में पानी का जमाव हो जाता है, जिससे कोशिकाएं फट जाती हैं। पौधों की पत्तियां सूख जाती हैं। परिणामस्वरूप फसलों में भारी क्षति हो जाती है। पाले के प्रभाव से पौधों की कोशिकाओं में जल संचार प्रभावित होता है। प्रभावित फसल अथवा पौधे का बहुभाग सूख जाता है, जिससे रोग व कीट का प्रकोप बढ़ जाता है। पाले के प्रभाव से फल व फूल नष्ट हो जाते हैं। सब्जी फसल पाला आने से अधिक प्रभावित होती है व पूरी तरह से नष्ट हो जाती है। पाला पड़ने की संभावना होने पर किसान खेत में सिंचाई करें। पर्याप्त नमी होने से फसलों में नुकसान की संभावना कम होती है। पाला पड़ने की संभावना होने पर खेत की उत्तरी-पश्चिमी दिशा की मेड़ों पर रात्रि में धुआं करना चाहिए। फसलों में जल-विलेय सल्फर 80 प्रतिशत की 500 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करें। फसलों पर जल विलेय उर्वरक एनपीके 18:18:18 और एनपीके 00:52:34 की एक किग्रा मात्रा प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करें।

कृषि विशेषज्ञों ने बताए आसान उपाय

अंचल के किसान पहले कर रहे थे परंपरागत खेती

ग्वालियर के तीन किसानों ने खेती को बनाया लाभ का धंधा

संवाददता, ग्वालियर। भयपुरा के रोशनलाल, राजू और भरथरी के सुरेंद्र बघेल परंपरागत खेती से किसी तरह गुजर-बसर कर रहे थे। अब उन्नत तकनीक को सीखकर वे गुलाब, सब्जी और फलदार खेती की पैदावार कर लाखों कमा रहे हैं। अब यह उन किसानों के लिए उदाहरण बन चुके हैं, जो परंपरागत खेती कर मुनाफा नहीं कमा पा रहे हैं। तीन किसानों ने अपनी सफलता के लिए उद्यानिकी विभाग को श्रेय दिया। जिसने उन्हें नई व उन्नत तकनीक सिखाकर खेती को लाभ का व्यवसाय बना दिया। भयपुरा के रोशनलाल कुशवाह बताते हैं कि हमारा परिवार पहले परंपरागत खेती कर किसी तरह से गुजर बसर कर रहा था। सिंचाई और खाद-बीज की लागत के अलावा मुनाफा कमाना दूर की बात होती थी। उद्यानिकी विभाग से मैंने उन्नत खेती के लिए नई तकनीक सीखी और एक हेक्टेयर भूमि में गुलाब व सब्जी की खेती करना शुरू किया। साथ ही फसल में सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई की व्यवस्था की। उद्यानिकी विभाग ने बताया कि फसल में कब, कौन सा बीज या खाद देना है, किस तकनीक का उपयोग करना है। इस नई तकनीक की बदौलत वर्ष 2020-21 में मैंने एक हेक्टेयर भूमि में गुलाब और सब्जी से करीब 5 से 6 लाख की फसल पैदावार की। भयपुरा के राजू कुशवाह का भी यही हाल था। उद्यानिकी विभाग के अफसरों का कहना है कि राजू के पास रकवा भी कम था और मेहनत करने के बाद भी वह परंपरागत खेती से मुनाफा नहीं कमा पा रहा था, लेकिन जब उसे गुलाब की खेती करने की सलाह दी और गुलाब की खेती के लिए उसे उन्नत तकनीक भी सिखाई।

पहले मुश्किल से होती थी गुजर-बसर

सुरेंद्र सिंह बघेल का कहना है कि पहले वह परंपरागत खेती कर बढ़ी मुश्किल से घर का खर्च चला पाते थे। पूरा परिवार खेती किसानी करता, लेकिन इसके बाद भी उन्हें लाभ कम मिलता था। फिर उन्होंने उद्यानिकी विभाग की मदद से 1.80 हेक्टेयर भूमि पर अमरूद के फलदार पेड़ लगाए। पेड़ों के बीच के खाली स्थान पर मुनगा और मैथी की फसल उगाई। जिससे उन्हें हर साल ढाई लाख रुपए की आमदनी प्राप्त होने लगी। वे पहले साल में एक बार फसल बेचने मंडी जाते थे, अब हर दूसरे दिन फसल मंडी जाती है, मुनाफा भी अच्छा मिलता है।

इनका कहना है

परंपरागत खेती साल में एक बार पैदा होती है, जिससे मुनाफा भी एक बार ही मिलता है, लेकिन उद्यानिकी फसल हर सप्ताह तैयार हो जाती है। जिसे हर सप्ताह मंडी ले जाकर बेचकर मुनाफा लिया जा सकता है। जिन तीन किसानों ने इसे अपनाया आज उनकी माली हालत में सुधार हुआ और उनके लिए खेती लाभ का व्यवसाय बन गया।

सुशील कौरव, सहायक संचालक उद्यानिकी विभाग ग्वालियर

-बालाघाट जिले में नक्सल प्रभावित इलाके की महिला ने जुटाई हिम्मत

नक्सली दहशत के बीच सब्जी उगा रहीं महिलाएं

-अपनी आजीविका बढ़ाने के साथ अन्य महिलाओं की जिंदगी रोशन की

रफी अहमद अंसारी, बालाघाट।

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के नक्सल प्रभावित गढ़ी में रहने वाली महिला प्रेमा शांडिल्य (39) न केवल हिम्मत जुटाकर अपनी जीविका को आगे बढ़ा रही हैं, बल्कि नक्सल दहशत के बीच अन्य महिलाओं की जिंदगी में भी उजाला ला रही हैं। कभी घर-घर जाकर सब्जी बेचने वाली प्रेमा के जीवन में आजीविका मिशन की मदद से बदलाव आया है। उसकी जिंदगी की गाड़ी रफ्तार पकड़ चुकी है। नक्सल दहशत के बीच रोजगार गढ़ रहीं प्रेमा महिलाओं के लिए उम्मीद की किरण बन गई हैं। प्रेमा के प्रयास से अन्य महिलाएं भी उम्मीद के साथ अपनी आस पूरी कर रही हैं। अपने संघर्ष की कहानी बताते हुए प्रेमा कहती हैं कि कुछ महिलाओं के साथ मिलकर साल 2017 में मामूली अंश पूंजी जुटाकर आत्मनिर्भर बनने की ठानी और आगे कदम बढ़ाए तभी आजीविका मिशन ने उन्हें दो लाख रुपए की मदद दी। सिर पर टोकरी रखकर घर-घर सब्जी बेचने से मामूली मुनाफा हो पाता था, लेकिन अब मिशन की मदद से बाजारों तक पहुंचकर सब्जी बेच रही हैं। इससे आमदनी भी बढ़ी और उससे जुड़ी महिलाओं ने भी अपनी जीविका को आगे बढ़ाया है। अब वह अपने गांव की महिलाओं के लिए प्रेरक बन गई हैं।

बच्चों की शिक्षा का सपना साकार- प्रेमा इस बात से खुश हैं कि उसने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने का जो सपना संजोया था। बेटे के सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के बाद वह साकार हो गया है। इधर, दो बेटियों को स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा दिला दी। प्रेमा के पति एक निजी स्कूल में मामूली सी तनख्वाह में पढ़ाने जाते हैं, इससे गुजारा नहीं होता था। तब उसने सब्जी बेचना शुरू कर दिया। प्रेमा के सर्वोदय समूह की महिलाएं समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी का भी काम कर रही हैं। साथ ही उनका समूह आलू की खेती कर रहा है।

ऐसे किया प्रयास

प्रेमा साल ने 2002 नूतन स्व-सहायता समूह से जुड़कर काम शुरू किया। 2006 में खेत में धान काटते हुए साथी महिलाओं से बात कर 10 रुपए की अंशपूंजी जुटाकर सर्वोदय समूह नाम से समूह बनाया। साल 2017 आजीविका मिशन से जुड़कर काम शुरू किया तो आय का जरिया भी बढ़ा और आमदनी भी दोगुनी हो गई। इस समूह में प्रेमा सहित 11 महिलाएं हैं। इन दिनों समर्थन मूल्य पर धान खरीदी कर रही हैं।

ये भी खास

- चार साल पहले आजीविका मिशन के समूह से जुड़ीं प्रेमा
- 10-10 रुपए जोड़कर पूंजी जुटाना शुरू किया।
- गढ़ी में 42 समूहों का गठन कर आजीविका मिशन की गतिविधियों को बढ़ाया।
- प्रेमा शांडिल्य अब बाजारों में जाकर सब्जी बेच रही हैं।
- अब वह सालाना एक लाख से अधिक की आय अर्जित कर रहीं।
- सेनेटरी नैपकिन, प्रशिक्षण कार्य, सब्जी उत्पादन, कपड़े की दुकान और सब्जी बेचने के साथ सर्वोदय समूह की महिलाएं प्रेमा शांडिल्य के साथ समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी कर रही हैं।

गढ़ी में प्रेमा शांडिल्य ने सब्जी बेचकर अपनी जीविका को आगे बढ़ाया और समूह की गतिविधियों को बढ़ाकर समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी भी शुरू कर दी है। आय का जरिया बढ़ाकर प्रेमा ने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देने का सपना पूरा किया है। वह क्षेत्र की महिलाओं के प्रेरक बन गई हैं।
ओमप्रकाश बेदुआ, परियोजना प्रबंधक राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

समर्थन मूल्य पर बाजार खरीद घाटे का सौदा, छूट मिली तो दलालों को होगा फायदा

बाजार में बाजरा बेचने को मजबूर मुरैना के किसान

अवधेश डंडोतिया, मुरैना।

समर्थन मूल्य पर बाजार खरीदी इस साल किसानों के लिए घाटे का सौदा साबित रही। अगस्त महीने में आई बाढ़ व भारी बारिश के कारण इस साल बाजरा की गुणवत्ता हल्की रह गई, इसीलिए यह समर्थन मूल्य के मानकों पर पास नहीं हो रहा। नतीजा पंजीयन कराने वाले किसानों में से एक फीसद किसान भी समर्थन मूल्य पर बाजरा नहीं बेच पाए। किसानों ने औने-पौने दामों में बाजार में अपना बाजरा बेचा है। अब सरकार समर्थन मूल्य खरीदी को एफएक्यू मानकों से कुछ राहत देने की योजना बना रही है। अगर ऐसा हुआ तो इसका फायदा किसानों को नहीं, बल्कि व्यापारी व बिचौलियों को होगा। बाढ़ के कारण खराब हुई बाजरे की फसल की समस्या देखकर मुरैना कलेक्टर ने हाल ही में बाजरा को एफएक्यू मानकों से राहत देने के लिए सरकार को पत्र लिखा था।

भोपाल से गई थी टीम

हाल ही में खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग के प्रमुख सचिव फैज अहमद किदवई ने चार सदस्यीय स्पेशल टीम मुरैना भेजी। इस टीम में शामिल गुणवत्ता नियंत्रक भारतीय खाद्य निगम के सहायक महाप्रबंधक सतीश कुमार, एमपीएससीएससी के क्षेत्रीय प्रबंधक योगेश कुमार सिंह, कृषि विभाग के संयुक्त संचालक डीएल कोरी, खाद्य सुरक्षा अधिकारी धर्मेन्द्र कुमार जैन ने मुरैना जिले के बाजरा के सैंपल भोपाल भेजे हैं।

लक्ष्य 1.80 लाख, खरीदी 1444 मीट्रिक टन

समर्थन मूल्य पर बाजरा खरीदी की बदहाली को खरीदी के आंकड़ों से ही समझा जा सकता है। बीते साल जिले में 1 लाख 52 हजार मीट्रिक टन बाजरा की खरीदी हुई थी। इस बार लक्ष्य 1 लाख 80 हजार मीट्रिक टन का रखा गया है। खरीदी के लिए तय किया गया समय लगभग बीत चुका है और अभी तक मात्र 1444 मीट्रिक टन बाजरा सरकार ने खरीदा है। दूसरी ओर बाजार में 1 लाख 20 हजार मीट्रिक टन से बाजरा किसान बेच चुके हैं। सरकार को बाजरा बेचने के लिए 39102 किसानों ने पंजीयन करवाया था, जिसमें से अब तक मात्र 199 किसान ही समर्थन मूल्य पर बाजरा बेच पाए हैं। प्रशासन ने बाजरा खरीदी करने के लिए 79 खरीद केंद्र बनाए हैं, जिनमें से 31 केंद्रों पर यह खरीद हुई है, 48 खरीद केंद्र तो ऐसे हैं जहां एक भी किसान का बाजरा नहीं खरीदा गया है।

किसानों ने नाम पर बेचेंगे बिचौलिए

बाजरा खरीदी की तारीख आगे बढ़ सकती है और एफएक्यू मानकों में भी कुछ राहत मिल सकती है। अगर ऐसा होता है तो किसानों से ज्यादा व्यापारी-बिचौलियों को फायदा होगा। क्योंकि अधिकांश किसान अपना बाजरा 1400 से 1500 रुपए क्विंटल में व्यापारियों को बेच चुके हैं। पोरसा से लेकर अंबाह, मुरैना, जौरा व कैलारस क्षेत्र में कई व्यापारियों के गोदाम बाजरे से फुल हैं। अब बाजरा खरीदी के नियमों में बदलाव होगा तो किसानों से ज्यादा व्यापारियों के गोदामों का यह बाजरा 2150 रुपए क्विंटल के भाव में खरीद केंद्रों पर खप जाएगा। यह बाजरा उन्हीं किसानों के नाम से खपेगा जिन्होंने पंजीयन करवाया है।

इनका कहना है

समर्थन मूल्य पर बाजरा बेचने आए किसानों को तो सैंपल पास करने के नाम पर इतना परेशान किया गया है, कि किसानों ने अपना बाजरा सस्ते दामों पर व्यापारियों को बेच दिया है। सरकार को बाजरा की गुणवत्ता जांच में पहले ही राहत देनी चाहिए थी। अगर एफएक्यू मानकों में छूट दी गई तो व्यापारियों का बाजरा किसानों के नाम से बिकेगा।
भानूप्रताप सिंह सिकरवार, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष, जौरा

भोपाल से भेजी गई टीम मुरैना के कुछ खरीद केंद्र से बाजरा के सेंपल लेकर गई है। यह कवायद एफएक्यू मानकों में छूट दिलाकर किसानों का बाजरा समर्थन मूल्य पर बिकवाने के लिए की जा रही है। जल्द ही पता लगेगा कि बाजरा खरीदी की तारीख आगे बढ़ेगी या नहीं और कितनी राहत किसानों को मिलेगी।
बीएस तोमर, जिला आपूर्ति नियंत्रक अधिकारी, मुरैना

किसान देश की शान, जैविक खेती के साथ साथ करें योगिक खेती

सैय्यद जावेद अली, मंडला।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय मंडला द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम ब्रह्माकुमारी संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के द्वारा आयोजित किया गया था। कार्यक्रम बस स्टैंड के पीछे विश्व शांति भवन में हुआ। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा भारत के सभी किसानों को जैविक खेती के साथ योगिक खेती के बारे में बताया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम ने किसानों को जैविक खेती को अपनाने की बात कही। साथ ही सभी को खेती करने के तरीके से अवगत कराया। मंडला सेवा केंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी ममता दीदी साथ में ओमलता दीदी, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पशु चिकित्सक डॉ. प्रणय भारतीय व किसान उपस्थित रहे। ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी ने अतिथियों को बैज लगाया व गुलदस्ते देकर स्वागत किया। ब्रह्माकुमारी ओमलता ने सभी किसानों को राष्ट्रीय किसान दिवस की शुभकामनाएं दी। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पशु चिकित्सक डॉ. प्रणय भारतीय ने पशुपालन के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान की। ब्रह्माकुमारी ममता ने सभी को राष्ट्रीय किसान दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि किसान देश की शान है। बताया कि जैविक खेती के साथ साथ योगिक खेती को भी अपनाना है, जिससे हम शुभ संकल्पों, शुभ विचारों के साथ खेती कर सकें। राजयोग हमें योगी जीवन के द्वारा निर्मल मन से सच्चे अर्थ में स्वाभिमानी बनना सिखाता है। इसके बाद सभी को प्रतिज्ञा दिलाई कि देश की प्रगति एवं विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। अपनी खेती के कुछ हिस्से में शाश्वत योगिक खेती प्रारंभ करेंगे।

-ब्रह्माकुमारी संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग में बताए हुनर

उड़ीसा और उत्तरप्रदेश के विशेषज्ञों ने कहा

सीहोर की दलहन फसल सबसे बेहतर

सीहोर।

जिले में दलहन के क्षेत्रफल व उत्पादन में विगत वर्षों से निरंतर वृद्धि हो रही है। जिले में दलहन वृद्धि का निरीक्षण के लिए दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के विज्ञानी व उड़ीसा के अधिकारियों ने जिले के ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण किया और फसलों का अवलोकन किया। भ्रमण दल द्वारा जिले में फसल स्थिति पर बेहतर बताया। भ्रमण के दौरान उप संचालक कृषि व वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी दल के साथ रहे। दलहन अनुसंधान संस्थान के दल ने जिले में दलहन उत्पादन के तहत चना व मसूर फसल के अवलोकन के लिए ग्राम महोड़िया में कृषक के चना किस्म

आरबीजी-202 व विक्रम फूले फसल का अवलोकन किया। चितावलिया हेमा के कृषकों के चना, मसूर, अरहर फसल तथा ग्राम कुलासकलां के कृषक की जैविक फार्म में हल्दी, गेहूं, फल उद्यान व सब्जी व देसी कोल्हू विधि इकाई का निरीक्षण किया। दल द्वारा इकार्डा में मसूर, चना, तिवड़ा, रामबटली, कठिया गेहूं, जौ की नवीन किस्मों का अवलोकन भी किया गया। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर के संचालक डॉ. शिव सेवक, प्रमुख विज्ञानी, क्वाट उड़ीसा डॉ. निरंजन सेनापति, दलहन व तिलहन के संयुक्त संचालक श्रीधर कुमार दास, दलहन बीज हब के नोडल अधिकारी डॉ. पीके कटियार सहित इकार्डा अमलाहा के डॉ. निग्मानंद, डॉ. रीना मेहरा, डॉ. सुरेंद्र बारपेटे तथा उड़ीस के जानकी वल्लभ महापात्रा, डॉ. अजोर कुमारकर उपस्थित थे।

-प्रधानमंत्री मोदी ने किया बनारस डेयरी संकुल का शिलान्यास, कहा

गाय-गोबरधन की बात कुछ लोगों के लिए गुनाह पर हमारे लिए गाय माता और पूज्यनीय

सुरेश गांधी, वाराणसी।

हमारे यहां गाय की बात करना, गोबरधन की बात करना कुछ लोगों ने गुनाह बना दिया है। गाय कुछ लोगों के लिए गुनाह हो सकती है, हमारे लिए गाय, माता है, पूजनीय है। गाय-भैंस का मजाक उड़ाने वाले लोग ये भूल जाते हैं कि देश के 8 करोड़ परिवारों की आजीविका ऐसे ही पशुधन से चलती है। गाय और भैंस पर चुटकुले बनाने वाले, उन पर निर्भर करोड़ों लोगों की आजीविका के बारे में भूल जाते हैं।

यह बात पीएम नरेंद्र मोदी ने उत्तर प्रदेश में अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में दुग्ध उत्पादों से जुड़ी अमूल सहकारी संस्था की बनास डेयरी संकुल परियोजना के शिलान्यास समारोह के दौरान कही। मोदी ने देश के लिए पशुधन की उपयोगिता की चर्चा करते हुए गाय को मां समान बताया तो यह भी कहा कि गाय और गोबरधन की बात करना देश में गुनाह बना दिया गया है। उन्होंने कहा कि भारत के डेयरी सेक्टर को मजबूत करना, आज हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। 6-7 वर्ष पहले की तुलना में देश में दूध उत्पादन लगभग 45 प्रतिशत बढ़ा है।

- श्वेत क्रांति देशभर के किसानों की स्थिति को बदलने में निभाएगी अहम भूमिका
- यूपी देश का सबसे अधिक दूध उत्पादक राज्य, डेयरी सेक्टर के विस्तार में भी बहुत आगे
- छोटे किसान जिनकी संख्या 10 करोड़ है, उनकी अतिरिक्त आय का बड़ा साधन डेयरी
- पशुपालन, महिलाओं के आर्थिक उत्थान, उद्यमशीलता को आगे बढ़ाने का बहुत बड़ा जरिया
- जो हमारा पशुधन है, वो बायोगैस, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती का भी बहुत बड़ा आधार

डेयरी प्राकृतिक खेती का आधार

आज भारत दुनिया का लगभग 22 प्रतिशत दूध उत्पादन करता है। मुझे खुशी है कि यूपी आज देश का सबसे अधिक दूध उत्पादक राज्य तो है ही, डेयरी सेक्टर के विस्तार में भी बहुत आगे है। तीसरा ये कि पशुपालन, महिलाओं के आर्थिक उत्थान, उनकी उद्यमशीलता को आगे बढ़ाने का बहुत बड़ा जरिया है। चौथा ये कि जो हमारा पशुधन है, वो बायोगैस, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती का भी बहुत बड़ा आधार है।

आगे बढ़ने अपार संभावनाएं

मोदी ने कहा कि पहला ये कि पशुपालन, देश के छोटे किसान जिनकी संख्या 10 करोड़ से भी अधिक है, उनकी अतिरिक्त आय का बहुत बड़ा साधन बन सकता है। दूसरा ये कि भारत के डेयरी प्रॉडक्ट्स के पास, विदेशों का बहुत बड़ा बाजार है जिसमें आगे बढ़ने की बहुत सारी संभावनाएं हमारे पास हैं। मेरा अटूट विश्वास है कि देश का डेयरी सेक्टर, पशुपालन, श्वेत क्रांति में नई ऊर्जा, किसानों की स्थिति को बदलने में बहुत बड़ी भूमिका निभा सकती है। इस विश्वास के कई कारण भी हैं।

लोगो बताएगा गाय की खूबी

पीएम ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की मदद से भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा विकसित दुग्ध उत्पादों की अनुरूपता आकलन योजना को समर्पित एक पोर्टल और लोगो भी लॉन्च किया। पीएम ने कहा कि भारतीय मानक ब्यूरो ने देशभर के लिए एकीकृत व्यवस्था जारी की है। सर्टिफिकेशन के लिए कामधेनु गाय की विशेषता वाला एकीकृत लोगो भी लॉन्च किया गया है। ये प्रमाण, ये लोगो दिखेगा तो शुद्धता की पहचान आसान होगी और भारत के दूध उत्पादों की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति मिश्रा और बोर्ड मेंबर अभय महाजन ने किया मार्गदर्शन

चित्रकूट। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्रबंधन संकाय में सतत विकास के विभिन्न उद्देश्यों को लेकर चल रहे कार्यशाला के पांचवें दिन कुलपति प्रो. भरत मिश्रा व प्रबंध मंडल के सदस्य डॉ. अभय महाजन, संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान ने प्रत्यक्ष रूप से पहुंच कर मार्गदर्शन दिया। इस दौरान प्रबंधन संकाय के अधिष्ठाता प्रो. अमरजीत सिंह ने कार्यशाला का उद्देश्य, औचित्य और सतत विकास की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

ग्रामोदय विवि में आयोजित एसडीजी कार्यशाला में किया मंथन

कोलारस में एक के बाद एक आ रहे नोटिस

गलती तहसीलदार की और भुगत रहे किसान

खेमराज मौर्य, कोलारस।

शिवपुरी जिले में सूखा राहत-2017 में तहसीलदारों ने आरबीसी 6/4 में नियम विरुद्ध भुगतान की मंजूरी प्रदान कर दी। जबकि एक किसान के खाते में 60 हजार रुपए से कम की प्रशासनिक स्वीकृति थी तो फिर तहसीलदारों द्वारा किसान के खातों में 60 हजार से अधिक की राशि क्यों डाली गई। जिसकी जानकारी किसानों को भी नहीं है, लेकिन अब किसानों के पास अधिकारियों द्वारा वसूली के नोटिस भेजकर उन पर रिकवरी निकाली जा रही है। इससे किसानों में हड़कंप मच गया है। गौरतलब है कि वर्ष 2017 में सूखा राहत में किसानों को राशि वितरित की गई है। आरबीसी 6/4 के प्रावधानों के अनुसार एक कृषक को 60 हजार से अधिक के भुगतान की स्वीकृति नहीं दी जा सकती, लेकिन शिवपुरी जिले की सभी तहसीलों में तहसीलदारों द्वारा एक कृषक को 60 हजार रुपए से अधिक के आदेश स्वीकृत किए हैं। जबकि जिलाधीश द्वारा इस मामले की जांच कराई गई तो जिन किसानों के खातों में 60 हजार रुपए से अधिक की राशि जारी की गई हैं, उन किसानों को वसूली के नोटिस जारी किए गए हैं।

जांच पर भी उठा सवाल

इस संबंध में पटवारियों द्वारा भी किसानों की सही तरीके से जांच नहीं की गई। जिससे अब किसान परेशान हो रहे हैं। इससे यह साफ जाहिर होता है कि बिना किसी नियमानुसार तहसीलदारों द्वारा 60 हजार से अधिक की राशि की स्वीकृति कैसे प्रदान की गई है। यह कहीं न कहीं जांच की जद में आना चाहिए। क्योंकि यह प्रशासनिक स्वीकृति स्थानीय तहसीलदार द्वारा एक किसान के खाते में 60 हजार से अधिक की राशि कैसे जारी कर दी गई।

इन किसानों को थमाए नोटिस

कोलारस तहसील के अंतर्गत इन किसानों को पता ही नहीं है, उनके खाते में 60 हजार से अधिक की राशि आई है, लेकिन इन किसानों को अनुविभागीय अधिकारी के निर्देशन में तहसीलदार द्वारा नोटिस दिए गए हैं। जिनमें शांति देवी पत्नी भगवत सिंह ग्राम बेंटा, आमोल सिंह पिता प्राण सिंह ग्राम मड़ीखेड़ा, हरवीर सिंह पिता चांद सिंह कनावदा, रामसिंह-विश्व सिंह पिता चांद सिंह रघुवंशी निवासी ग्राम कनावदा, कपूरी पत्नी रामसिंह रघुवंशी निवासी कनावदा और घासीराम पिता खुमना ग्राम कनावदा शामिल हैं।

समेकित खेती से कुपोषण का होगा खात्मा

कराहल। समेकित खेती एक ऐसी टिकाऊ कृषि पद्धति है, जिसमें कृषि के साथ ही वानिकी, बागवानी, मुर्गी पालन, बकरी पालन, डेयरी तथा मत्स्य पालन के साथ ही अनाज, दलहन, तिलहन व विभिन्ना प्रकार की सब्जियों का समेकित रूप से उत्पादन किया जाता है। यह बात बीएमजेड एवं डब्ल्यूएचएच के सहयोग से महात्मा गांधी सेवा आश्रम संस्था के द्वारा संचालित पोषण समृद्ध ग्राम परियोजना के तहत किसानों और पोषण स्वयंसेवियों को समेकित खेती पद्धति पर दो दिवसीय प्रशिक्षण में परियोजना समन्वयक प्रशांत थोरात ने कही। समेकित खेती पद्धति में पशुपालन से मिलने वाले गोबर और गौमूत्र का उपयोग कर विभिन्ना प्रकार की जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशक बनाकर उसका उपयोग खेत में किया जाता है। इसी प्रकार खेत से मिलने वाले चारे से पशुपालन भी आसानी से किया जा सकता है, जिसके किसान की आय में भी वृद्धि होती है। समेकित खेती पद्धति को अपनाने से एक ओर कृषि की लागत में कमी आती है तो वही दूसरी ओर, खाद्य सुरक्षा बढ़ने के साथ ही विविधतापूर्ण भोजन की उपलब्धता में भी बढ़ोतरी होती है, जिससे परिवार के पोषण स्तर की पूर्ति होने से कुपोषण से भी मुक्ति मिल सकती है।

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, राम नरेश वर्मा-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
रहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
बैतूल, सतीष साहू-8982777449
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पताः- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)